



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

अधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 69]

नई दिल्ली, बुधवार, अप्रैल 12, 1995/चैत्र 22, 1917

No. 69] NEW DELHI, WEDNESDAY, APRIL 12, 1995/CHAITRA 22, 1917

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 अप्रैल, 1995

सं. 3/1/95-पब्लिक.—10 अप्रैल, 1995 को भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री मोरारजी रणछोड़जी देसाई के निधन से भारत ने एक ऐसे महान प्रशासक, अनुभवी संसद-विश्व, महान देश भक्त तथा स्वतंत्रता सेनानी को खो दिया है जिसने छह दशकों से भी अधिक समय तक राष्ट्र की अनुकरणीय सेवा की है।

2. गुजरात राज्य के भवेली गांव में 29 फरवरी, 1896 को जन्मे श्री मोरारजी देसाई ने बिल्मन कालेज, बम्बई से स्नातक परीक्षा पास की और 1918 में बम्बई सरकार की प्रोविशियल सिविल सर्विस में सेवा आरम्भ की। 12 वर्ष तक विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के पश्चात् उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर 1930 में डिप्टी कलेक्टर के पद से

त्यागपत्र दे दिया और सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल हो गए। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण 1931—34 के दौरान उन्हें तीन बार जेल जाना पड़ा। वे गुजरात प्रवेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गए और इसके सचिव के रूप में दो बार का कार्यकाल पूरा किया। 1937 में वे बंबई विधान सभा के लिए चुने गए और राज्य में पहली कांग्रेसी सरकार में राजस्व तथा वनमंत्री का पदभार संभाला। 1939 में उन्होंने अपना पदभाग छोड़ दिया और वैयक्तिक सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें फिर से तीन साल की जेल हुई। 1946 में वे फिर से बम्बई विधान सभा के लिए चुने गए तथा 1946 से 1952 तक राज्य के गृह एवं राजस्व मंत्री के रूप में कार्य किया। 1952 के धाम चुनावों के पश्चात् वे बंबई के मुख्य मंत्री हो गए और भू-राजस्व, पुलिस तथा जेल प्रशासन में सुधार लाने का श्रेय प्राप्त किया।

3. श्री देसाई नवंबर, 1956 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के रूप में पहली बार केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए। 1958 में वे वित्त मंत्री बने। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक क्रोष और अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक सहित विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में कई बार भारतीय प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व किया। उन्होंने 1960 और 1961 में लंदन में हुए राष्ट्रमंडल देशों के वित्त मंत्रियों के सम्मेलन में भाग लिया। भारत की तीसरी पंचवर्षीय योजना के लिए विदेशी सहायता जुटाने के लिए श्री देसाई ने जुलाई, 1962 में यूरोप का दौरा किया और सितम्बर-अक्टूबर 1962 के दौरान वाणिज्य, कोटावा और टोकियो गए। विकास के जरिए सुरक्षा, आत्म विश्वास और पहल का माहौल बनाना तथा निर्यात को बढ़ावा देना उनकी लोक-नीति का मुख्य आधार थे। सरकारी प्रशासन, सार्वजनिक निगमों और निजी क्षेत्र की कंपनियों और साथ ही समाज के विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग के व्यक्तिगत जीवन में मितव्ययता के दृढ़ पक्षधर थे।

4. श्री देसाई 1957, 1962, 1967, 1971 और 1977 में हुए ग्राम चुनावों में सूरत निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए। 1962 के ग्राम चुनावों के बाद श्री देसाई को नेहरू जी के मंत्रिमंडल में एक बार फिर वित्त मंत्री का पदभार सौंपा गया। अगस्त, 1963 में कांग्रेस पार्टी को मजबूत बनाने के लिए कामराज योजना के अंतर्गत उन्होंने स्वेच्छा से त्याग पत्र दे दिया। 1966-67 के दौरान उन्होंने भारत सरकार के प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। मार्च, 1967 में वे फिर से मंत्रिमंडल में आ गए और इस बार श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार में उपप्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री का पदभार संभाला। उन्होंने अगस्त-अक्टूबर, 1967 के दौरान टोकियो, लंदन, मांट्रियल, वाणिज्य, पैरिस और बोन की सद्भावना यात्राएं की। जुलाई, 1969 में उन्होंने सरकार से त्यागपत्र दे दिया और कांग्रेस पार्टी में 1969 के विभाजन के बाद वे नवंबर, 1969 में कांग्रेस (ओ) पार्टी के अध्यक्ष बने। वे 1977 में नवगठित जनता पार्टी के पहले अध्यक्ष बने। 1977 के लोकसभा चुनावों के बाद वे 24 मार्च, 1977 को प्रधान मंत्री बने। लेकिन जनता पार्टी में विभाजन हो जाने के कारण 15 जुलाई, 1979 को उन्होंने सरकार से त्याग-पत्र दे दिया।

5. एक अग्रणी राष्ट्रीय नेता के रूप में श्री देसाई का स्वदेशी तथा राष्ट्रवादी शिक्षा में पक्का विश्वास था। अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ, सनोसरा में लोक भारती तथा अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक, अकादमिक एवं सामाजिक संस्थाओं के साथ उनका घनिष्ठ संबंध रहा। उनका पूरा कैरियर आत्म-विश्वास, साहस तथा दृढ़ता से भरपूर था।

6. श्री देसाई एक सच्चे गांधीवादी थे, ईश्वर में आस्था रखते थे, लेकिन कर्मकाण्डी नहीं थे। वे शाकाहारी

थे, धूम्रपान एवं मद्यपान विरोधी थे। उनका व्यक्तित्व सादगीपूर्ण था और वे दृढ़ निश्चयी थे।

7. श्री देसाई एक प्रतिभाशाली लेखक थे। लोक सेवा में वमस्त जीवन के बावजूद वे बौद्धिक कार्य-कलाप के लिए समय निकालने में सफल रहे। उन्होंने "डिस्कॉसिस आन द गीता", "द स्टोरी ऑफ माई लाइफ", "बुक ऑन नेचर क्योर", "इन माई वियू", "इण्डियन यूनिटी" फ्राम ड्रीम टु रियैलिटी" तथा "मिनिस्टर एण्ड हिज रेसनांसिबिलिटीज" नामक छह पुस्तकें लिखी हैं।

8. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र, में उनकी दीर्घ तथा उत्कृष्ट सेवा के लिये उन्हें 1991 में सर्वोच्च राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार—"भारत रत्न" से सम्मानित किया गया।

9. अपने जीवनकाल के सौवें साल में प्रवेश करते पर भी भारत और भारतवासियों के कल्याण की कामना उनके मन में बनी रही। उनके स्वच्छ और निर्मल जीवन तथा भारत के प्रति उनकी शानदार सेवाओं से हमारे देशवासियों को निरन्तर प्रेरणा मिलती रहेगी।

के पद्मनाभय्या, सचिव

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS NOTIFICATION

New Delhi, the 12th April, 1995

No. 3/1/95—Public.—In the passing away of Shri Morarji Ranchhodji Desai, former Prime Minister of India on the 10th April, 1995 India has lost a great administrator, a seasoned parliamentarian, a staunch patriot and a freedom fighter who had rendered exemplary service to the Nation for a period spanning over six decades.

2. Born on the 29th February, 1896 at village Bhadeli in the State of Gujarat, Shri Morarji Desai graduated from the Wilson College, Bombay and joined the Provincial Civil Service of the Government of Bombay in 1918. After serving 12 years in various administrative capacities, he resigned from the post of Deputy Collector in 1930 to join the Civil Disobedience Movement in response to the call of Mahatma Gandhi. He took part in the various activities of the freedom struggle and during 1931-1934 he was imprisoned on three occasions for participating in the freedom movement. He was elected as a member of the Gujarat Pradesh Congress Committee and served as its Secretary for two terms. In 1937, he was elected to the Bombay Legislative Assembly and served as Minister of Revenue and Forests in the first Congress Government in that State. He relinquished his office in 1939 to participate actively in the Individual Civil Disobedience Movement and

was again imprisoned for three years during the Quit India Movement. In 1946 he was again elected to the Bombay Legislative Assembly and served as Home and Revenue Minister of the State from 1946 to 1952. He then became the Chief Minister of Bombay after the General Elections of 1952 and was instrumental in bringing about reforms in land revenue, police, and jail administrations.

3. Shri Desai joined the Union Cabinet in November 1956 and served first in the Ministry of Commerce and Industry. In 1958 he became the Minister for Finance. He led a number of Indian Delegations to various International Conferences including those of the International Monetary Fund and the International Bank for Reconstruction and Development. He attended the Commonwealth Finance Ministers' Conferences held in London in 1960 and 1961. In order to mobilise foreign aid for India's Third Five Year Plan, Shri Desai visited Europe in July 1962 and also Washington, Ottawa and Tokyo during September-October, 1962. Strength and security through development, creation of a climate of confidence and initiative, and export promotion, formed the main planks of public policy. Austerity in Government administration, public corporations and companies in the private sector as well as in the personal lives of the privileged segments of society were strong convictions with him.

4. In the General Elections of 1957, 1962, 1967, 1971 and 1977, Shri Desai was elected to the Lok Sabha from the Surat constituency. After the General Elections of 1962, Shri Desai took the Finance portfolio in the Nehru Cabinet. In August, 1963, he voluntarily resigned under the Kamraj Plan aimed at strengthening the Congress Party. He then worked as the Chairman of the Administrative Reforms Commission, Government of India, during 1966-67. In March 1967, he again joined the Cabinet, this time as Deputy Prime Minister and Minister for Finance in Shrimati Indira Gandhi's Government. He made

goodwill visits to Tokyo, London, Montreal-Washington, Paris and Bonn during August-October, 1967. In July 1969, he resigned from the Government and after the 1969 split in the Congress Party he became the Chairman of the Congress (O) in Parliament in November 1969. He became the first Chairman of the newly formed Janata Party in 1977. After the 1977 Lok Sabha Elections, he became the Prime Minister on the 24th March, 1977 but with the split in the Janata Party, he resigned on the 15th July, 1979.

5. A front-rank national leader, Shri Desai was a firm believer in Swadeshi and in nationalistic education and was closely associated with the Gujarat Vidya-peeth at Ahmedabad, the Lok Bharati at Sanosara and also with several cultural, religious, academic and social bodies. His entire career was a saga of self-confidence, courage and conviction.

6. Shri Desai was a true Gandhian. He was a theist but not a ritualist. Vegetarian, non-smoker and teetotaler he was a Spartan and a person with strong convictions.

7. Shri Desai was a gifted writer. Despite his busy life of public service he was able to spare time for intellectual pursuits. He wrote six books, namely, 'Discourses on the Gita', 'The Story of My Life', 'Book on Nature Cure', 'In My View', 'Indian Unity From Dream to Reality' and 'Minister and his Responsibilities'.

8. In recognition of his long and outstanding service in the national and international spheres, he was awarded the highest National Civilian Award, the Bharat Ratna, in 1991.

9. Even as he entered the hundredth year of his life his main concern was for the welfare of India and her people. His pure and unsullied life and his glorious services to India will long continue to inspire his compatriots.

K. PADMANABHAIAH, Secy.

